# वृत्ति कभी भी तृप्ति दे नहीं सकती

ज़िन्दगी के उतार-चढ़ाव की बात झूलते हुए झूले जैसी है। एक बार जब झूला पीछे की तरफ जाता है, फिर आता है, और फिर वापिस ऊँचे की तरफ जाता है। ठीक वैसे ही व्यक्ति एक बार अर्थोपार्जन की होड़ को शुरु करता और वापिस उसी तरह अर्थ प्राप्ति उसके जीवन का ध्येय, परम लक्ष्य बन जाता है। संतोषी जीवन था तो सम्पूर्ण शांति थी, लेकिन उस जीवन में असंतोष उपजा यानि उत्पात शुरु हुआ, और ये उत्पात ऐसा था कि आपको शांति से बैठने ना दे।

- ब्र. कु. गंगाधर

ये बात जैसे कि गांठ बांध लेनी चाहिए कि वृत्ति कभी जीवन में तृप्ति नहीं देती। इस ज़माने का दुर्भाग्य ये है कि मनुष्य उस वृत्ति की तृप्ति के पीछे पागल बनकर दौड़ता रहा है और पारावर अतृप्ति में उसके जीवन का अंत आता है। ऐसी अतृप्ति के कारण उसकी ज़िन्दगी अंधकारमय, एक दिशा की दौड़ बन जाती है। उस दौड़ के पीछे कोई बुद्धि या तर्क नहीं होता। बस सब भूलकर और आँखें बंद कर अंधकार दौड़ लगाता रहता है। उसकी भोग की ओर दौड़ उसकी मति को भूला देती है।

जैसे कि पहले उसके जीवन में काम-वासना की वृत्ति आती है और वासना बढ़ते पूरे जगत को वो काम-तृप्ति का साधन मान बैठता है और वो अतृप्ति में घी डालता जाता है, लेकिन अग्नि का घी होम उसकी वृत्ति वासनाओं को और बढ़ाता जाता है और वापिस जीवन में काम-वासना की वृत्ति को संतोषने के लिए एक के बाद एक कदम पैर डालते हुए बेहाल बनाता है। उसकी वासना मात्र उसके अंगत जीवन में रहने के बदले चारो तरफ मर्यादाहीन बनकर बहकती रहती है। खुद की वृत्ति के साधन के तौर-तरीके में वो दूसरे को शामिल करता है और फिर एक समय ऐसा आता है जब खुद की वासना की परितृप्ति के लिए विकृत विषयों की ओर चला जाता है।

हम इस बहुत खूबसूरत धरती पर रहते हैं जहाँ मानव की विकृत हरकतें पशु समान होती हैं, जो कि नैतिकता को दरकिनार कर देती है। चाइल्ड पोनोग्राफी भी इस जगत पर अस्तित्व में आई है। वृत्ति इतनी हद तक विकृत हो जायेगी, उसका एक ये नमूना है। ऐसी वृत्ति की लीला मानव के मन पर बहुत गुप्त रीति से प्रभुत्व जमा देती है। जो व्यक्ति सावधान ना हो, तो वो उसके चित्त में दबते पाँव से प्रभावित करता है। आज से बीस वर्ष पहले के अखबारों को देखें तो भाग्य ही किसी अभिनेत्री की तस्वीर छपती थी, और आज दैनिक अखबार में रोज़ ही उन्हीं की तस्वीरें दिखाई देती हैं। भले ही उनका समाचारों के संबंध में लेना-देना ना हो। ये है वर्तमान समय की वृत्ति को पोषक करने की तरकीबें।

जैसे क्रिकेट जैसे खेल में 'चियर लीडर्स' रखी जाती हैं और खेलोत्सव के पूर्व रंगारंग कार्यक्रम का आयोजन करते हैं। ऐसे मानव अपनी कामवृत्तियों को इतनी हद तक पनपने देता है। चाहे अखबार हो या टेलिविज़न हो या कोई उत्सव हो, अपनी वृत्ति को सभी एंटरटेनमेंट में परिवर्तित करने लगते हैं। ये सब उपाय आज़माते रहते हैं। ऐसे उपायों से किसी को भी शांति, संतोष, तृष्णा की संतृप्ति या आंतरिक सुख नहीं हो सकता।

साधक को सबसे पहले तो वृत्ति को जगाने वाले बीज को खोजना चाहिए। वृत्ति के मूल में जाने की ज़रूरत है। अगर इस मूल को ही काट दिया जाए तो वृत्ति चित्त को प्रभावित नहीं करेगी। हम अपनी वृत्ति के मूल को चिंतन करने के बदले वृत्ति के द्वारा उसी तरफ चले जाते हैं। सच्चा साधक वृत्ति के बीज को खोजता है, जिससे उसके जीवन में वृत्ति का बीज सहज अंकुरित होकर पौधा बन ना सके।

इसीलिए बुद्ध ने उनके एक दु:खी भिक्षुक को कहा, 'आप दु:ख के सागर में डूब गये हो और आपको दु:ख निवारण का कोई मार्ग मिलता नहीं, लेकिन उसका एक सरल मार्ग है। आप इस जंगल में से ज़मीन से तीन पौधे लेकर आओ, जिसके ऊपर छोटे से तीन पत्ते हों, ऐसे अंकुरित पौधे उसके मूल सहित लेकर आओ।'

भिक्षुक जंगल में गया और अलग-अलग प्रकार के चार-पाँच पौधे उखाड़ कर लेकर आया और बुद्ध को दिया। बुद्ध ने इस पौधे में से एक पत्ता तोड़ा और भिक्षुक को पूछा 'कहो, ये पत्ता कौन से पौधे का है?'

- शेष पेज 8 पर

# हीरे जैसा जीवन बनाकर ईगो और अटैचमेंट से मुक्त रहना

दादी जानकी, मुख्य प्रशासिका

तीन बारी ओम् शान्ति का बहुत अच्छा रेसपांस दिया। मेरा ओम् शान्ति का यह आशीर्वचन नहीं है, परन्तु दिल से मैं कौन हूँ, मेरा कौन है? मैं कौन बोल रही हूँ? आत्मा, शरीर में है तब बोल रही है। क्या बोल रही है कि मैं किसकी हूँ? मैं कौन, मेरा कौन? तो बाबा ने ऐसा लेसन पक्का कराया है जो कभी भी मैं का ईगो नहीं, मेरे का अटैचमेंट नहीं। मैं मैं यह ईगो है, मेरा मेरा यह अटैचमेंट है, इन दोनों से फ्री हो गये ना। बाबा ने गोद बिठाया, गले लगाया, पलकों में बिठा करके परमधाम में ले जा रहा है। ठीक है, सबको क्या भासना आती है! बच्चे कहते बाबा तुम्हें देखता रहूँ... बाबा भी कहता है बच्चे मैं तुम्हें देखता रहूँ...। मैं कहाँ हूँ? बाबा की गोदी में। बाबा इतना अच्छा है गोद बिठाके अपना बना लिया। फिर वर्से में क्या मिलता है, वो दिखा दिया। हम बच्चे हैं बाबा के, बच्ची नहीं हैं। बच्चा हूँ वारिस हूँ। मैं कौन तो लाइट हो गये, मेरा कौन तो माइट आ गयी। माताओं में काम, क्रोध तो नहीं होता है, अहंकार भी नहीं होता है परन्तु थोड़ासा लोभ मोह होता है, तो कहती हैं यह हमारे पास होना चाहिए। मोह व्यक्ति में होता है, लोभ अच्छा घर चाहिए, अच्छे जेवर चाहिए, यह चाहिए, वह चाहिए। जो बाबा ने सिखाया है, समझाया है, जितना प्यार किया है वो सबको मिले, यह भावना है।

जब ऐसी सभा देखते हैं तो कितनी सुन्दर सभा लगती है। डायमण्ड हॉल में बैठे हैं, सभी का लक्ष्य यह है यह समय है हीरे जैसा बनने के लिये। हीरे जैसा जन्म लेना है तो कौड़ियों के पीछे टाइम नहीं गँवाना है। कौड़ी, कौड़ी है, कहाँ सम्भालेंगे। पुराने ज़माने में कौड़ियों से खरीदारी करते थे, तब कौड़ियों का भी मूल्य था। अभी ज़माना बदल गया। हमको अपनी जीवन हीरे जैसी बनानी है। मुझे कोई चीज़ें नहीं चाहिए परन्तु जीवन ऐसी हो जो जीना अच्छा लगे। बाबा ने अपना बनाके मुस्कराना सिखा दिया, तो मुस्कराने के लिये जीना है अब। सारी लाइफ में कोई बात मुश्किल नहीं है। तुम मात पिता हम बालक तेरे, तुम्हरी कृपा से सुख घनेरे, कोई न जाने तुम्हारा अन्त ... पर हम तो जानते हैं वो कौन है, कैसा है, कब आता है, क्या करता है? समझा।

तो अभी हरेक ऐसा फील करे कि अभी हम निर्वाणधाम में जाने के लिये, निराकारी बनने के लिये तैयार हैं! यह संगठन इसीलिए इक्ट्ठा हुआ है। इसके लिये सच्चाई, सफाई और सादगी से जियो, इसमें कोई खर्चा नहीं है। कम खर्च बालानशीन। और यज्ञ में जितना डालो उतना भण्डारा भरपूर काल कंटक दूर। भण्डारे में जितना डालेंगे उतना वो हमारा जमा हो रहा है। बाबा एकदम सिम्पल और साधारण, पर चेहरा ऐसा बाबा तुम्हें देखता रहूँ... क्योंकि बाबा की हमारे ऊपर दृष्टि ऐसी है जो यहाँ ताकत आ जाती है। मेरे को पूछते हैं तुम्हारे में इतनी शक्ति कहाँ से आती है? मैंने कहा यह भी कोई क्वेश्चन है! सर्वशक्तिवान मेरा बाप है, तो शक्ति उससे आयेगी ना। बहनें मातायें अच्छी तरह से समझना, कभी ढ़ीला-ढ़ाला नहीं बनना है। मेरा नाम जानकी है, तो बाबा ने कहा तुम्हें जनक मिसल ट्रस्टी और विदेही रहना है। अन्दर जो प्रैक्टिस है ना मैं आत्मा इस शरीर में होते न्यारी हूँ, त्रिनेत्री और त्रिकालदर्शी हूँ। आत्मा कहाँ रहती है? चमकता हुआ स्टार आँखों द्वारा दिखाई देता है। हमारा बाप है ज्ञान सूर्य, माँ है ज्ञान चन्द्रमा। सूर्य आता है तो अन्धकार चला जाता है। जब फुल मून होता है तो कई उसको देखने के बाद ही भोजन खाते हैं, तो यह जो कुदरती नियम भक्ति में भी बनाके रखे थे उससे लाइफ में कभी भी कोई प्रॉब्लम नहीं आई। ज्ञान में भी बाबा ने हमें नियम बनाकर दिये हैं। नियम संयम पूर्वक चलते चलो तो कोई मुश्किल नहीं है। बहुत सहज योगी लाइफ है।

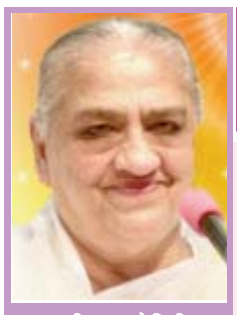
दादी हृदयमोहिनी
अति.मुख्य प्रशासिका

# व्यर्थ और निगेटिव से बचने की युक्तियाँ

हमारे ख्यालो में भी और ख्वाबों में भी एक बाबा ही है और बाबा की हम बच्चों प्रति यही आश है तुम मेरे, मैं तेरा, न तुम मेरे को भूलो, न मैं तेरे को भूलूँ - यही बाबा चाहता है। जब बाबा याद होगा तो नैचुरल बाबा की याद से जो हम अपने जीवन में शक्तियाँ या धारणाएं चाहते हैं, वह बाबा की याद में समाई हुई हैं ही। तो बाबा कहते हैं बस और कुछ नहीं करो, मुझे भूलो नहीं क्योंकि मेरे को भूलने से ही आपको इतनी मेहनत करनी पड़ती है, अगर तुम मेरी याद में रहो तो आज कोई कामना उठी या क्रोध आ गया ..तो इस मेहनत से छूट जायेंगे और मेरी याद में खो जायेंगे, बस। जो प्यार के आनंद में खोया हुआ होता है उसको कोई भी बाहर की आकर्षण खींचती नहीं। बाबा की आश को प्रैक्टिकल में लाने के लिए याद भूले नहीं। इसके लिए बाबा ने अभी तो बहुत सहज तरीका सुना दिया। कोई बहानेबाजी इसमें नहीं चल सकती, बाबा ने इसीलिए पाँच बारी ट्रैफिक कंट्रोल रखा कि भूल भी जाये तो फिर से फट से याद आवे। अभी तक तो बाबा पाँच मिनट कहते थे लेकिन अब तो पाँच सेकण्ड ही कहते, ऐसा काम किसी का नहीं है, जो इतना टाइम भी नहीं निकाल सके। सिर्फ यह ज़रूर है कि इस बात के लिए जो बाबा ने सहज साधन दिया है उसके लिए अपने कुछ नियम वा चार्ट बनाना पड़ेगा क्योंकि हरेक काम की रीति रसम, टाइम, संग, कम्पनी भी होती है। इसीलिए बाबा कहते हैं आप ही टाइम निकालो। विधि को सेट करो।

ब्रह्मा बाबा ने ''मैं आत्मा हूँ'' का पाठ इतना पक्का किया था जो बाबा की सारी डायरी उससे भरी हुई थी कि मैं भी आत्मा, यह भी आत्मा, वह भी आत्मा। और हम लोगों को भी बाबा ने शुरू-शुरू में यह आत्मा का पाठ बहुत पक्का कराया। परमात्मा का ज्ञान धीरे-धीरे स्पष्ट हुआ है लेकिन आत्मा का ज्ञान शुरू से ही हम लोगों को मिला। आत्म-अभिमानी बनना यही हमारा मुख्य लक्ष्य और पुरूषार्थ था। इसमें अपने ग्रुप्स बने हुए थे और रेस करते थे जैसे कि हमने पाँच मिनट निकाला, तो दूसरे कहेंगे हम दस मिनट निकालेंगे और फिर तीसरा ग्रुप कहता था रात को दो घण्टा जागकर और बढ़ाऊंगा ऐसे हम लोग आपस में रेस करते थे। और मम्मा की विशेषता यह थी कि आप घड़ी देखो नहीं देखो, अमृतवेले अढ़ाई बजना माना मम्मा के कमरे की लाइट जलना। हम सबने एक दिन मम्मा को पूछा कि आप इतना जल्दी वह भी रोजाना जागकर क्या करती हो? तो मम्मा कहती थी कि मैं योग में आत्म-अभिमानी स्थिति में स्थित होकर बैठती हूँ, मैं रूहों को सकाश देती हूँ, मैं तुम्हारे रूह को भी इमर्ज करके तुमको भी सकाश, शक्ति या लाइट देती हूँ। तो हम लोग इस बात को नहीं समझते थे। अभी तो इन सब बातों का स्पष्टीकरण हमारे सामने है। इसलिए अभी तो वह सब कॉमन बात हो गई है। तो मम्मा ने शुरू से अपनी स्व-उन्नति के लिए इस प्रकार से पुरूषार्थ और पालना की है। तो ऐसे ग्रुप्स को देख एक दो को उमंग आता था, अभी तो अपना व्यक्तिगत चार्ट रखना, पुरूषार्थ करना यह पावर आ गई है। हर एक स्वयं को जितना मेकप करना चाहे उतना कर सकते हैं।

बाबा बीच-बीच में आत्म-अभिमानी बनने अथवा पाँच सेकण्ड की ड्रिल करने के लिए कहता है, उसमें जो बीच में विघ्न पड़ता है वह एक तो है व्यर्थ संकल्प और दूसरा है निगेटिव देखना, सोचना। यह दो विघ्न योग को बहुत नीचे करते हैं क्योंकि मन में ही तो वेस्ट थॉट चलते हैं। और निगेटिव देखने-सोचने की अगर आदत पड़ गई तो हमारी वृत्ति कभी शुद्ध नहीं होगी। तो यह दोनों ही विघ्न हमारी मन्सा शक्ति को नहीं बढ़ा सकते या मनमनाभव होने नहीं देंगे। लेकिन अगर हमारी मन्सा में शुद्धि है, वृत्ति-दृष्टि में निगेटिव नहीं है, शुभभावना, शुभकामना की वृत्ति है तो भले हम कितना भी मन को कामकाज में बिज़ी रखें तो भी हमारी वृत्ति चंचल नहीं होगी। काम पूरा होगा फिर वही वृत्ति आ जायेगी क्योंकि वृत्ति में और कुछ है ही नहीं।

तो हमने देखा कि कइयों के बुरे संकल्प नहीं हैं, कोई विकल्प नहीं हैं लेकिन जो ज़रूरी नहीं है उसको वेस्ट ही कहेंगे। तो वह वेस्ट थॉट इसलिए चलते हैं क्योंकि हमें अपने मन को बिज़ी रखने का तरीका नहीं आता है। खाली बुद्धि है तो वेस्ट चलता है, अगर आपके पास टाइम ही नहीं है तो वेस्ट कैसे जायेगा। ऐसे अगर मन-बुद्धि, वृत्ति में फ्रीडम है, मन बिज़ी नहीं है तो वेस्ट जायेगा। और बुद्धि को बिज़ी रखने के लिए अगर हम बड़े वी.आई.पी. की तरह एक डायरी में पांच-पांच मिनट का टाइम टेबल बना लेते हैं तो वेस्टेज से बच जायेंगे। हमारे लिए तो अभी संगम का यह थोड़ा सा समय ही पुरूषार्थ के लिए है। बिना संगम के तो कोई यह पुरूषार्थ कर ही नहीं सकता है। संगम में ही शिवबाबा हमको मिला, सर्व शक्तियां मिलीं, यह अलौकिक सम्बन्ध मिला। अभी तो वतन में जितना समय चाहो उतना समय मिलन मना सकते हो।